ग़ालिब की शायरी

ये हम जो हिज़्र में दीवार-ओ-दर को देखते हैं
कभी सबा को कभी नामा-बर को देखते हैं
वो आये घर में हमारे, खुदा की क़ुदरत है
कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं
नज़र लगे न कहीं उस के दस्त-ओ-बाज़ू को
ये लोग क्यों मेरे ज़ख्म-ए-जिगर को देखते हैं
तेरे जवाहिर-ए-तर्फ -ए-कुलह को क्या देखें
हम औज़-ए-ताला -ए-लाल-ओ-गुहर को देखते हैं।

'बाढ-ए-सबा' अर्थात सुबह की ठंडी हवा जो बिना किसी रोक-टोक के हर जगह आती-जाती है इसलिए कवि इसे संदेशवाहक के तौर पर देखता है। जब कोई व्यक्ति किसी के इंतज़ार में होता है तो वह बेचैनी की स्थिति में इधर-उधर देखता है। विशेष से जुदाई का पल बहुत मुश्किल से काटता है।जुदाई की स्थिति में व्यक्ति कभी दीवार को देखता है तो कभी छत और दरवाज़े को। इसका सीधा सा मतलब यह है कि उसे लगता है कि कोई आकर उसकी प्रेमिका की खबर सुनाएगा या उसका कोई संदेश लेकर आएगा। हो सकता है जिस प्रकार सुबह की हवा बे-रोक-टोक हर जगह आती-जाती है उसी प्रकार उसकी प्रेमिका भी उसके सामने आ जाए।

इस दोहे (शेर) की दूसरी पंक्ति में प्रेमी की उस स्थिति का बयान किया गया है जिसके तहत अचानक अपनी प्रेमिका को अपने घर देखकर प्रेमी आश्चर्य चकित हो जाता है और इस हालत में वह कभी अपनी प्रेमिका को देखता है तो कभी अपने घर को देखता है और फिर अपने भाग्य पर खुश होता है।

इस शेर में शायर को यह भरोसा नहीं है कि उसकी प्रेमिका उसके घर आ सकती है। प्रेमिका का प्रेमी के पास अचानक आना प्रेमी के प्रति प्रेमिका के प्यार का परिचायक है।

इस दोहे में शायर यह कहना चाहता है कि प्रेमिका ने प्रेमी के जिगर पर बहुत गहरा आघात किया है। आम तौर पर प्रेमिका की पहचान उसकी नाज़ुकता से होती है। तो शायर यह कहना चाहता है कि प्रेमिका की नज़ाकत को देखते हुए यह नहीं लगता है कि वह इस तरह का घाव भी दे सकता है। यही वजह है कि जो भी उस घाव को देखता है वह प्रेमिका के हाथ व बाज़ू की तारीफ़ करता है। प्रेमिका की इस तारीफ पर प्रेमी को लगता है कि उसे

नज़र लग सकती है। ऐसे में वह अपने दिल के घाव को किसी से दिखाना नहीं चाहता है। न तो लोग वह घाव देखेंगे, न उसकी प्रशंसा करेंगे और न ही उसे नज़र लगेगी। यह ग़ालिब के मुख्य शेरों में से एक है।

इस शेर में शायर यह कहना चाहता है कि हम उन जवाहरात को क्या देखें जो तूने अपनी टोपी के सिरे पर टाँग रखा है। हम तो लाल-वो-गौहार अर्थात हीरे-जवाहरात के भाग्य की बुलंदी और खुशकिस्मती को देखते हैं कि यह तेरी टोपी का हिस्सा बनकर या उसमे टंक कर अपनी हैसियत बढ़ा रहे हैं। इस शेर के द्वारा शायर यह कहना चाहता है कि उसकी प्रेमिका की यह ख़ुशी है कि हीरे जवाहरात की चमक उसके खूबसूरती के आगे कम है। आम तौर से लड़कियाँ अपनी खूबसूरती को बढ़ाने के लिए जेवरात पहनती हैं| लेकिन यहाँ प्रेमिका की सुंदरता से ये जेवरात अपनी सुंदरता बढ़ा रहे हैं।

रहिए अब ऐसी जगह चलकर जहाँ कोई न हो
हम-सुखन कोई न हो और हम जवां कोई न हो
वे-दरो-दीवार सा इक घर बनाया चाहिये
कोई हम साया न हो और पासवां कोई न हो
पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार
और अगर मर जाइये तो नौहा-ख्वां कोई न हो।

ग़ालिब के प्रस्तुत शेर में 'अब' शब्द यह बता रहा है कि जो लोग हमारे दोस्त थे, हमारे साथ रहते थे, हमारे पड़ोसी थे उन लोगों ने किसी न किसी रूप में दुखी जरूर किया है। यही वजह है कि शायर उनसे नाराज़ रहने लगा है और ऐसी हालत में वह एकांत में रहना चाहता है जहाँ किसी का आना जाना न हो अर्थात न तो उससे कोई मिलने आयेगा न ही उसे दुखी करेगा।

इसमें शायर कहना चाह रहा है कि हमें ऐसा घर बनाना चाहिए जिसमे न कोई दीवार हो और न ही कोई दरवाजा। अर्थात अगर उस घर में दरवाजा नहीं होगा तो उसके लिए पहरेदार की आवश्यकता भी नहीं होगी और अगर उसमें दीवार नहीं होगी तो कोई पड़ोसी या हमसाया नहीं होगा। शायर को यहाँ हमसायों और पासबानों (पास रहने वालों या पहरेदारों) से नफ़रत है इसलिए वह ऐसी जगह पर रहना चाहता है।

शायर यहाँ यह कहना चाहता है कि चूँकि यह लोग मुनाफिक हैं जिनकी कथनी और करनी में बहुत अंतर होता है। ऐसे ही लोगों ने उसे दुःख पहुँचाया है। इसी वज़ह से जब वे लोग शायर के बीमार पड़ने पर हाल-चाल पूछने आते हैं तो शायर दुखी होता है। शायर ऐसी

जगह रहना चाहता है जहाँ एकांत हो। जहाँ अगर वह बीमार हो तो कोई उसका तीमारदार न हो और अगर वह मर जाए तो कोई उस पर आँसू बहाने वाला भी न हो। इसका सीधा अर्थ यह है कि यह दुनिया जहान के लोगों से पूरी तरह से नाराज़ है क्योंकि लोगों ने शायर के साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया जिसके कारण वह सबसे नाराज़ है।